HIND

FOUNDATION

HRIDAYAM FOR INTERNATIONAL NATURAL DEMOCRACY

TRUTH IS OUR GOAL • FREEDOM IS OUR PRINCIPLE • DEMOCRACY IS OUR PATH

REG. NO. : E/1830/BK

हिंद फाउंडेशन

HIND FOUNDATION

अंतरराष्ट्रीय नैसर्गिक लोकतंत्र के लिए हृदयम्

Hridayam for International Natural Democracy

सत्य की खोज। हृदयम् की अनुभूति। मानवजाति का एकीकरण।

फाउंडेशन विज़न दस्तावेज़

www.thehindfoundation.com ◆ contact.hindfoundation@gmail.com

अनुक्रमणिका

भाग I · हिंद फाउंडेशन की परिकल्पना 3

प्रस्तावना 4

फाउंडेशन के तीन मूलभूत सिद्धांत 5

फाउंडेशन की दो प्रमुख शाखाएँ 7

अंतिम लक्ष्य 10

भाग II · हृदयम् का आध्यात्मिक मार्ग 11

1. हृदयम् क्या है? 12

1.1 उपनिषदों में हृदयम् 14

1.2 हृदयम् की चक्रीय लय के तत्त्व और उसके साधक 15

1.3 विभिन्न धार्मिक दर्शन: अद्वैत हृदयम् तक पहुँचने के सोपान 17

1.4 हृदयम् की अनुभूति के लिए दो मार्ग 19

2. पूर्णता की अनुभूति और मानव कल्याण 20

2.1 पूर्णता, त्याग और अस्तित्व का एकत्व 21

3. धर्म और सांप्रदायिकता के बारे में दृष्टिकोण 23

4. वर्ण और जाति के बारे में दृष्टिकोण 26

5. हिंदू राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीयवाद के बारे में दृष्टिकोण 29

6. मानवजाति की एकता: पहचान से ऊपर सत्य 32

भाग I

हिंद फाउंडेशन की परिकल्पना

अंतरराष्ट्रीय नैसर्गिक लोकतंत्र के लिए हृदयम्

❖ प्रस्तावना (Preamble)

मानवजाति आज अपने सभ्यतागत विकास के एक निर्णायक चरण पर खड़ी है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अभूतपूर्व प्रगति करने के बावजूद, मानवजाति अभी भी विभिन्न पहचानों, परस्पर विरोधी विचारधाराओं और सत्य पर एकाधिकार के दावों के कारण विभाजित है।

HIND फाउंडेशन का मानना है कि मानव जीवन का उद्देश्य अपूर्णता के भ्रम में जीना नहीं, बल्कि अपने भीतर पहले से ही विद्यमान पूर्णता का साक्षात्कार करना और उस पूर्णता की अनुभूति के अनुरूप संसार में एकत्व तथा सामूहिक चेतना (लोकतंत्र) के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना है। सृष्टि का यह अंतिम सत्य किसी जड़ मान्यता में नहीं, बल्कि अस्तित्व की मूलभूत लय 'हृदयम्' में निहित है। फाउंडेशन इस 'हृदयम्' की वैश्विक अनुभूति और 'अंतरराष्ट्रीय नैसर्गिक लोकतंत्र' के प्रसार के लिए समर्पित है।

❖ फाउंडेशन के तीन मूलभूत सिद्धांत (The Three Pillars)

1. सत्य हमारा ध्येय है (Truth is Our Goal)

मानवजाति में सत्य की सर्वोच्च अनुभूति भारतीय भूमि पर 'हृदयम्' के रूप में हुई है, जो मानवीय आत्मानुभूति का अब तक का सर्वोच्च शिखर है। सत्य की खोज तब तक पूर्ण नहीं होती, जब तक यह अनुभूति प्राप्त न हो जाए। यह संस्था मानवजाति को सत्य की खोज के लिए किसी उत्तरहीन अथवा दिशाहीन मैदान में बेसहारा नहीं छोड़ती, बल्कि 'हृदयम्' को एक मार्गदर्शक प्रकाशस्तंभ के रूप में स्थापित करती है। इस अंतिम अनुभूति को वैज्ञानिक और तार्किक रूप से प्रस्तुत किया जाता है, ताकि मनुष्य स्वतंत्रतापूर्वक इस पर प्रश्न उठा सके, इसके विपरीत तर्कों की जाँच कर सके और ईमानदारी से अपने निष्कर्ष निकाल सके। फाउंडेशन इस जिम्मेदारी और विश्वास के साथ कार्य करता है कि यदि मनुष्य सत्य की खोज में बीच में ही नहीं रुकता, तो संसार के किसी भी मार्ग से अंततः उसे 'हृदयम्' की ही अनुभूति होती है।

2. स्वतंत्रता हमारा सिद्धांत है (Freedom is our Principle)

मनुष्य विज्ञान, धर्म, थियोलॉजी (Theology) अथवा किसी भी अन्य मार्ग से सत्य की खोज करने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र है। लेकिन किसी भी मनुष्य अथवा संस्था को अपना मार्ग दूसरों पर थोपने का अधिकार नहीं है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को केवल अपने मार्ग से प्राप्त विकास में सहायता दे सकता है, उसे अपना पंथ बदलने के लिए बाध्य नहीं कर सकता।

स्वामी विवेकानंद ने शिकागो धर्म संसद में गीता के श्लोक का उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया था कि, "जिस प्रकार सभी नदियाँ अलग-अलग मार्ग अपनाकर अंततः एक ही समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार संसार के सभी पंथ और मनुष्य अंतिम सत्य में ही विलीन होते हैं।"

विवेकानंद और गांधीजी ने स्पष्ट किया था कि धार्मिक ज्ञान के आदान-प्रदान का उद्देश्य धर्मांतरण नहीं, बल्कि मनुष्य को उसके अपने ही मार्ग पर और अधिक श्रेष्ठ बनाकर सत्य के और निकट ले जाना है। प्रत्येक मार्ग एक अलग तर्क है। फाउंडेशन इस प्रमेय को सिद्ध करता है कि किसी भी तर्क को निरंतर विकसित करते रहने पर अंततः वह 'हृदयम्' की अनुभूति पर ही आकर ठहरता है।

3. लोकतंत्र हमारी पद्धति है (Democracy is our Path)

प्रत्येक जीव में 'हृदयम्' तत्त्व विद्यमान है और संपूर्ण सृष्टि इसी एक तत्त्व से परस्पर जुड़ी हुई है। इस आंतरिक जुड़ाव के कारण ही मानव समाज का संचालन किसी निरंकुश सत्ता अथवा कट्टरता से नहीं, बल्कि 'सामूहिक चेतना' के माध्यम से होना चाहिए। इस प्रकार, नैसर्गिक लोकतंत्र (Natural Democracy) केवल एक राजनीतिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि प्रत्येक जीव में विद्यमान 'हृदयम्' की सामाजिक और सार्वभौमिक अभिव्यक्ति है।

लोकतंत्र मानव स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा के प्रति सम्मान की सामाजिक अभिव्यक्ति है।

लोकतंत्र स्वयं सर्वोच्च मूल्य नहीं है, बल्कि सत्य सर्वोच्च मूल्य है; लोकतंत्र मूल्यवान इसलिए है क्योंकि वह ऐसी सामाजिक परिस्थितियों का निर्माण करता है, जिनमें सत्य की खोज फल-फूल सकती है।

यह अंतःकरण की स्वतंत्रता, सत्य की खोज, मानवीय गरिमा, वैज्ञानिक चिंतन तथा मानवजाति और प्रकृति के बीच सामंजस्य की रक्षा करता है। कोई भी लोकतंत्र तब 'नैसर्गिक' (Natural) नहीं रह जाता, जब उसमें भय, कट्टरता, जबरदस्ती, जनसांख्यिकीय प्रभुत्व (demographic domination), वैचारिक निरंकुशता अथवा संगठित घृणा स्वतंत्रता और सत्य का स्थान ले लेती है।

नैसर्गिक लोकतंत्र तभी सर्वोत्तम रूप से कार्य करता है, जब विविधता की स्वतंत्रता को एक सर्वोच्च लक्ष्य की ओर गतिशील किया जाता है। हृदयम् की अनुभूति और उसके अनुसरण के लक्ष्य के साथ संपूर्ण मानवजाति में सभी विविधताओं को समाहित करते हुए एक वास्तविक नैसर्गिक लोकतंत्र स्थापित किया जा सकता है।

❖ फाउंडेशन की दो प्रमुख शाखाएँ (The Two Wings)

संस्था के उद्देश्यों को वैश्विक स्तर पर साकार करने के लिए HIND फाउंडेशन दो प्रमुख शाखाओं के माध्यम से कार्य करता है: **(1) द हिंद पथ** और **(2) द हिंद टेबल**।

1. हृदयमार्ग - हिंद पथ (The Hind Way)

हृदयमार्ग
The Hind Way
सत्य • शोध • पूर्णता • एकत्व

'हृदयम्' (अस्तित्व की मूलभूत लय) की स्वतंत्र मन से खोज करने, उस पर प्रश्न उठाने और उसे प्राप्त करने के अनेक मार्ग अपनाने की स्वतंत्रता देने वाली जो सभ्यतागत विरासत भारतीय उपमहाद्वीप (हिंद) में विकसित हुई, उसे हम 'हिंद पथ' कहते हैं।

हृदयम् की अनुभूति के लक्ष्य के लिए जीवन जीना और हृदयम् की पूर्णता की अनुभूति के साथ संसार में अपनी जिम्मेदारी निभाना—इसे ही हिंद पथ कहा जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप में ऐतिहासिक रूप से जिसे 'हिंदू जीवनपथ' और 'हिंदू धर्म' कहा गया है, उसे ही हम सार्वभौमिक संदर्भ में 'हिंद पथ' कहते हैं। हिंद पथ कोई धर्म, संप्रदाय अथवा रूढ़िवाद नहीं है, बल्कि यह मुक्त चिंतन और सत्य की खोज की संस्कृति है।

हृदयम् दर्शन और उसकी दार्शनिक परिभाषा

वेदांत और आधुनिक ब्रह्मांड विज्ञान (Cosmology) के गहन चिंतन के अनुसार, यह सृष्टि कोई अलग से हुआ 'सृजन' नहीं है, बल्कि मूलभूत ऊर्जा का निरंतर 'प्रक्षेपण' (Projection) है। सृष्टि की मूल ऊर्जा केवल विस्तार ही नहीं करती, बल्कि वह विस्तारित होती है, संकुचित होती है, अव्यक्त होती है और फिर से विस्तार आरंभ करती है। उपनिषदों और संस्कृत व्याकरण के अनुसार, ब्रह्मांड के इस सबसे बड़े वैज्ञानिक सत्य को 'हृदयम्' शब्द (ह + द + य) पूर्ण रूप से परिभाषित करता है:

ह्र Hṛ	**हरति** — अपनी ओर खींच लेना अर्थात् ब्रह्मांडीय ऊर्जा का संकुचन (Withdrawal / Contraction)।
द Da	**ददाति** — बाहर की ओर देना अर्थात् ऊर्जा का विस्तार (Expansion)।
य Ya	**याति** — गति करना अर्थात् इस विस्तार और संकुचन की निरंतर चलने वाली चक्रीय गति (Cyclic Motion)।

जिस तत्त्व में संकुचन, विस्तार और चक्रीय गति समाहित हैं, वही अद्वितीय, निराकार मूल ऊर्जा अर्थात् हृदयम् है। यही तत्त्व ब्रह्मांड में, प्रकृति में तथा प्रत्येक जीव के हृदय की धड़कन और श्वास-प्रश्वास में निरंतर अभिव्यक्त होता है।

हृदयम् की यह चक्रीय गति सृष्टि के दो महान चरणों और उनके साधकों का निर्माण करती है:

- **ब्रह्म और ब्राह्मण:** हृदयम् के विस्तारित होने वाले चरण को 'ब्रह्म' कहा जाता है। इस विस्तारित ब्रह्म (अर्थात् प्रवृत्ति तथा भौतिक या सामाजिक सृजन के मार्ग) का अनुसरण करने वाले अथवा उसे जानने का प्रयास करने वाले को 'ब्राह्मण' कहा जाता है (जैसे भौतिक और जीव वैज्ञानिक)।
- **शर्वम् और शार्व:** विस्तार का चरण पूर्ण होने के बाद जब ऊर्जा अपने मूल की ओर लौटती है और संकुचित होती है, तब उस संकुचित होते हृदयम् को 'शर्वम्' कहा जाता है (जो 'शिव' का दार्शनिक आधार है)। जिस प्रकार विस्तारित ब्रह्म का अनुसरण करने वाला ब्राह्मण है, उसी प्रकार संकुचित होते शर्वम् (अर्थात् निवृत्ति, वैराग्य और विलय के मार्ग) का अनुसरण करने वाले साधक को 'शार्व' कहा जाता है। जो अपनी चेतना को सृजन के मोह से वापस खींचकर अपने मूल की ओर ले जाता है, वही शार्व है।
- **हृदयज्ञ और हार्दज्ञ:** जो दार्शनिक इस विस्तारित (ब्रह्म) और संकुचित होते (शर्वम्) ब्रह्मांडीय ऊर्जा के संपूर्ण चक्र को आत्मसात कर लेता है, वह 'हृदयज्ञ' है। और जो व्यक्ति बाहर भटकने के बजाय अपने भीतर विद्यमान मूल तत्त्व हृदयम् के शुद्ध अंश (हार्दम्/आत्मा) को पहचान लेता है, वह 'हार्दज्ञ' अथवा 'आत्मज्ञानी' है।

इस हृदयम् दर्शन को प्राप्त करने के लिए हिंद पथ दो मार्गों को स्वीकार करता है:

- **आंतरिक मार्ग:** ध्यान, योग और आत्मचिंतन के माध्यम से अपने हृदयम् को प्राप्त करने का मार्ग।
- **बाह्य मार्ग:** विज्ञान, तर्क और प्रयोगों के माध्यम से ब्रह्मांड में व्याप्त ब्रह्मांडीय लय को समझने का मार्ग।

2. द हिंद टेबल (The Hind Table)

HIND
THE HIND TABLE
DIALOGUE • DISCOURSE • DEMOCRACY • DEVELOPMENT

द हिंद टेबल HIND फाउंडेशन का सार्वजनिक नीति (Public Policy), वैचारिक संवाद और सभ्यतागत चिंतन के लिए एक थिंक टैंक मंच है। इसका उद्देश्य हृदयम् सिद्धांत और नैसर्गिक लोकतंत्र के आलोक में लोकतंत्र, सुशासन, विज्ञान, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, प्रौद्योगिकी और मानव सभ्यता के भविष्य जैसे विषयों पर तथ्य-आधारित और रचनात्मक सार्वजनिक संवाद को प्रोत्साहित करना है। द हिंद टेबल किसी विशेष विचारधारा के समर्थन के लिए नहीं है, बल्कि प्रत्येक विचार का निष्पक्ष परीक्षण करके स्वतंत्र और परस्पर सम्मानपूर्ण संवाद के माध्यम से सत्य के निकट पहुँचने के लिए है।

The HIND Index (द हिंद इंडेक्स)

द हिंद टेबल विश्व के समाजों का मूल्यांकन करने के लिए मापने योग्य सूचकांक (HIND Index) विकसित करेगा, जो अंतःकरण की स्वतंत्रता, वैज्ञानिक खुलेपन, शैक्षणिक गुणवत्ता, लोकतांत्रिक जवाबदेही और सामाजिक एकता के आधार पर तैयार किए जाएँगे।

संस्था की यह शाखा “The State of Human Freedom Report” और “The Global Truth-Seeking Index” जैसे वार्षिक प्रतिवेदन भी प्रकाशित करेगी।

❖ अंतिम लक्ष्य (Ultimate Vision)

पूर्णता की अनुभूति और मानव कल्याण

श्रीमद्भागवत में मूल ऊर्जा की इस चक्रीय गति को महाविष्णु के श्वास-प्रश्वास के रूप में दर्शाया गया है। सृष्टि का यह अंतिम सत्य मनुष्य को जीवित रखने वाली दो प्रक्रियाओं से सीधे जुड़ा हुआ है: हृदय का संकुचन-विस्तार और फेफड़ों का संकुचन-विस्तार (श्वास)।

जब मनुष्य हृदय की धड़कन और श्वास-प्रश्वास में स्थिर होकर स्वयं को 'हृदयम्' के रूप में अनुभव करता है, तब उसे पूर्णता का भाव प्राप्त होता है। मनुष्य ने हिंसा, छल-कपट, गरीबी से लेकर ग्लोबल वार्मिंग तक की सभी समस्याएँ अपनी 'अपूर्णता की भावना' (Incompleteness) से ही उत्पन्न की हैं। हृदयम् की अनुभूति इस अपूर्णता के भ्रम का नाश करके मनुष्य को एक-दूसरे का, प्रकृति का और संपूर्ण ब्रह्मांड का संवर्धन करने की सर्वोच्च जिम्मेदारी प्रदान करती है।

इतिहास ने बार-बार सिद्ध किया है कि नस्ल, वंशीयता, राष्ट्र, भाषा, धर्म अथवा विचारधारा के माध्यम से मानवता को स्थायी रूप से एक नहीं किया जा सकता। जब मानवीय पहचानें (Identities) सत्य से अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं, तब संघर्ष अपरिहार्य हो जाता है। मानवीय एकता केवल सत्य के प्रति साझा प्रतिबद्धता के माध्यम से ही संभव है, क्योंकि सत्य की खोज सबसे गहरी सार्वभौमिक मानवीय गतिविधि है। हम संपूर्ण मानवजाति को किसी एक संस्था अथवा पहचान की ओर नहीं, बल्कि 'हृदयम्' के माध्यम से सत्य की साझा खोज की ओर आमंत्रित करते हैं।

सत्य की खोज। हृदयम् की अनुभूति। मानवजाति का एकीकरण।

भाग II

हृदयम् का आध्यात्मिक मार्ग

हिंद फाउंडेशन में मानवजाति की एकता के लिए प्रस्थापित

लेखक — डॉ. कौशिक चौधरी

संस्थापक — हिंद फाउंडेशन

हिंद फाउंडेशन में हिंद शब्द का पूरा नाम है **HIND – Hridayam for International Natural Democracy**, अर्थात् अंतरराष्ट्रीय नैसर्गिक लोकतंत्र के लिए हृदयम्। पर यह "हृदयम्" क्या है? आइए शुरुआत इसे जानकर ही करते हैं।

1. हृदयम् क्या है?

भारतीय अध्यात्म और पश्चिमी आधुनिक विज्ञान, वास्तविकता के अपने-अपने क्षेत्रों में अन्वेषण करते हुए धीरे-धीरे हमारे अस्तित्व से जुड़े दो मूलभूत प्रश्नों के आसपास एक-दूसरे के निकट आ रहे हैं: पहला, इस अस्तित्व का आरंभ कैसे हुआ? और दूसरा, इस संपूर्ण अस्तित्व का अंतिम चरण क्या होगा?

वेदांत और आधुनिक ब्रह्मांड विज्ञान की कुछ विचारधाराओं में एक महत्त्वपूर्ण समानता दिखाई देती है: बिग बैंग अस्तित्व का निरपेक्ष आरंभ नहीं, बल्कि ब्रह्मांड के चक्रीय अस्तित्व के एक नए चरण का प्रारंभ हो सकता है। नोबेल पुरस्कार विजेता भौतिकशास्त्री सर रोजर पेनरोज़ भी बिग बैंग को एक निरपेक्ष शुरुआत के रूप में देखने के बजाय, उसे पूर्ववर्ती ब्रह्मांडीय चरण के अंत से जोड़कर समझाने वाला Conformal Cyclic Cosmology (CCC) मॉडल प्रस्तुत करते हैं।

1998 से पहले वैज्ञानिक समुदाय में ब्रह्मांड के विस्तार के संबंध में एक प्रचलित धारणा यह थी कि ब्रह्मांड का विस्तार एक चरण पर धीमा होकर रुक जाएगा और उसके बाद संकुचन शुरू होगा। यह संकुचन अंततः ब्रह्मांड को एक अत्यंत सघन अवस्था में ले जाएगा, जहाँ से नए बिग बैंग द्वारा ब्रह्मांड का एक नया कल्प आरंभ हो सकेगा। यह विचार भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में वर्णित सृष्टि के सृजन, स्थिति और प्रलय के चक्र के साथ समानता रखता है।

लेकिन 1998 में दूरस्थ सुपरनोवा पर किए गए अवलोकनों ने दर्शाया कि ब्रह्मांड केवल विस्तारित ही नहीं हो रहा है, बल्कि उसका विस्तार त्वरित है; अर्थात् समय के साथ उसके विस्तार की गति बढ़ रही है। इस खोज ने ब्रह्मांड के भविष्य के बारे में पूर्ववर्ती धारणाओं को चुनौती दी। डार्क एनर्जी के रूप में पहचाने जाने वाले अज्ञात ब्रह्मांडीय प्रभाव के कारण यदि ब्रह्मांड का विस्तार लगातार गति पकड़ रहा है, तो उसके पुनःसंकुचन की संभावना जटिल हो जाती है। इस परिस्थिति में ब्रह्मांड अनंत समय तक विस्तारित होता रह सकता है और अंततः तारों, आकाशगंगाओं तथा गुरुत्वाकर्षण से बँधी संरचनाओं का अस्तित्व क्षीण होता जा सकता है। यह भविष्य की एक संभावित कल्पना है, जिसे Heat Death अथवा ब्रह्मांड की अधिकतम एंट्रॉपी की अवस्था के रूप में जाना जाता है।

लेकिन ब्रह्मांड के इस संभावित अंत के सामने एक मूलभूत दार्शनिक प्रश्न खड़ा होता है: क्या विस्तार ही अस्तित्व की अंतिम दिशा है, अथवा विस्तार की यह प्रक्रिया भी किसी अधिक व्यापक चक्रीय व्यवस्था का एक भाग है?

हजारों वर्ष पहले भारतीय आत्मज्ञानियों ने सृष्टि के सृजन, स्थिति और विलय को एक निरंतर चक्रीय प्रक्रिया के रूप में समझने का प्रयास किया था। आधुनिक विज्ञान में भी इस प्रकार की संभावनाओं का अन्वेषण जारी है। रोजर पेनरोज़ ने स्टीफन हॉकिंग के साथ ब्रह्मांड की संरचना और अंत के संबंध में महत्त्वपूर्ण शोध किए थे। बाद में उन्होंने त्वरित विस्तार की खोज के पश्चात भी ब्रह्मांड के चक्रीय अस्तित्व की संभावना बनाए रखने वाला CCC मॉडल विकसित किया। 2006 से उन्होंने इस मॉडल को

विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया। इस मॉडल के अनुसार, एक ब्रह्मांडीय युग के अत्यंत दूरस्थ भविष्य में, जब ब्रह्मांड में भौतिक मापदंडों और पदार्थ की संरचनाओं का महत्त्व कम हो जाता है, तब उस अवस्था को अगले ब्रह्मांडीय युग के बिग बैंग से गणितीय रूप से जोड़ा जा सकता है। इस प्रकार, ब्रह्मांड का विस्तार पूर्ण हुए बिना भी एक नए ब्रह्मांडीय चक्र की संभावना की कल्पना की जा सकती है।

दूसरी ओर, क्विंटेसेंस और डायनामिक डार्क एनर्जी (Quintessence and Dynamic Dark Energy) जैसी वैज्ञानिक अवधारणाएँ ब्रह्मांड के भविष्य को एक और संभावनात्मक दृष्टिकोण से देखती हैं। इन अवधारणाओं के अनुसार, डार्क एनर्जी का स्वरूप समय के साथ बदल सकता है। यदि भविष्य में उसका व्यवहार बदलता है और ब्रह्मांड के त्वरित विस्तार के बजाय गुरुत्वाकर्षण जैसी आकर्षण की शक्ति प्रभावशाली हो जाती है, तो ब्रह्मांड के पुनःसंकुचन की संभावना उत्पन्न हो सकती है। इस प्रकार, ब्रह्मांड का विस्तार अंतिम न हो और संकुचन पुनः आरंभ हो सके, ऐसी संभावनाओं का भी वैज्ञानिक अन्वेषण किया जा रहा है।

इस प्रकार, क्लासिकल भौतिकी से लेकर क्वांटम मैकेनिक्स और आधुनिक ब्रह्मांड विज्ञान तक, विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में ब्रह्मांड के अंतिम स्वरूप और उसके चक्रीय अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों की निरंतर जाँच की जा रही है। भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं ने जिन प्रश्नों का सामना आत्मानुभूति और तत्त्वचिंतन के माध्यम से किया था, उन्हीं प्रकार के प्रश्नों को आधुनिक विज्ञान अवलोकन, गणित, प्रयोग और सैद्धांतिक मॉडलों के माध्यम से समझने का प्रयास कर रहा है।

इन दोनों अन्वेषणों के संगम स्थल पर हमारे अस्तित्व को परिभाषित करने वाला एक मूलभूत शब्द प्रस्तुत होता है: **हृदयम्।**

वेदांत में हमारे परम अस्तित्व के मूल तत्त्व को 'ब्रह्म' कहा गया है। 'ब्रह्म' शब्द का एक तात्त्विक अर्थ विस्तार करना अथवा वृद्धि पाना होता है। जिस मूल सत्ता से संपूर्ण सृष्टि अभिव्यक्त होती है, वह ब्रह्म है। लेकिन विस्तार उस मूल सत्ता का एकमात्र गुण नहीं है। यह मूल ऊर्जा विस्तारित होती है, संकुचित होती है और फिर विस्तारित होती है। विस्तार और संकुचन की यही निरंतर प्रक्रिया अस्तित्व की एक चक्रीय लय बनाए रखती है।

इस चक्रीय लय का एक प्रत्यक्ष उदाहरण हमें प्रत्येक सजीव के शरीर में दिखाई देता है। जीवन को बनाए रखने वाली दो महत्त्वपूर्ण शारीरिक प्रक्रियाएँ इस लय को निरंतर बनाए रखती हैं: फेफड़ों द्वारा होने वाला श्वास-प्रश्वास और हृदय द्वारा होने वाला रक्तसंचार।

फेफड़ों का संकुचन और विस्तार अपेक्षाकृत स्थूल शारीरिक प्रक्रिया है। मनुष्य इस पर कुछ सीमा तक स्वैच्छिक नियंत्रण प्राप्त कर सकता है। इसी कारण ध्यान और प्राणायाम की योगिक पद्धतियों में श्वास के नियमन को विशेष महत्त्व दिया गया है। श्वास के नियमन द्वारा मनुष्य अपने शरीर में चल रही प्राकृतिक लय के साथ सचेतन रूप से जुड़ने का प्रयास करता है।

इसकी तुलना में हृदय की क्रिया अधिक सूक्ष्म और निरंतर है। हृदय संकुचित होता है, विस्तारित होता है और फिर संकुचित होता है। उसके ये अविराम लयबद्ध स्पंदन जीवन की निरंतर गति बनाए रखते हैं। इस प्रकार, श्वास और हृदय की धड़कन—दोनों में संकुचन और विस्तार की चक्रीय प्रक्रिया अभिव्यक्त होती है।

सृष्टि की मूल ऊर्जा में विद्यमान विस्तार, संकुचन और पुनःविस्तार की जो लय है, उसे हम हृदयम् कहते हैं।

हिंद फाउंडेशन इसी चक्रीय लय को संपूर्ण अस्तित्व की मूल ऊर्जा से जोड़कर देखता है। सृष्टि की मूल ऊर्जा में विद्यमान विस्तार, संकुचन और पुनःविस्तार की जो लय है, उसे हम हृदयम् कहते हैं। और इस मूलभूत चक्रीय गति को हृदयम् की लय कहते हैं।

हृदयम् को परम अस्तित्व के मूल तत्त्व के रूप में पहचानने का दार्शनिक आधार भी उपनिषदों में प्राप्त होता है।

1.1 उपनिषदों में हृदयम्: परम अस्तित्व का स्वरूप

बृहदारण्यक उपनिषद (अध्याय 5, ब्राह्मण 3, मंत्र 1) में हृदय को प्रजापति, ब्रह्म और समस्त अस्तित्व के रूप में पहचानने वाला एक महत्त्वपूर्ण कथन मिलता है:

बृहदारण्यक उपनिषद · 5.3.1

तदेतत्प्रजापतिरेष हृदयम्। एतद् ब्रह्मैतत्सर्वम्। तद्येतद्धृदयम्। त्र्यक्षराणि। हृ इत्येकमक्षरम्। अभ्याहरन्ति हास्य स्वे चान्ये च। द इत्येकमक्षरम्। ददति हास्य स्वे चान्ये च। य इत्येकमक्षरम्। येति हास्य स्वे चान्ये च। लोकं यति य एवं वेद॥

अर्थ

यह हृदय ही प्रजापति है। यही ब्रह्म है और यही सब कुछ है। यह 'हृदय' शब्द तीन अक्षरों से बना है—'हृ', 'द' और 'य'।

'हृ' अक्षर का अर्थ यह है कि उसके अपने लोग तथा अन्य लोग उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसका आदर करते हैं।

'द' अक्षर का अर्थ यह है कि वह अपने लोगों तथा अन्य लोगों को दान देता है, अर्थात् उदारतापूर्वक प्रदान करता है।

'य' अक्षर का अर्थ यह है कि वह श्रेष्ठ लोक को प्राप्त करता है अथवा श्रेष्ठ गति प्राप्त करता है।

जो इस प्रकार जानता है, वह श्रेष्ठ लोक को प्राप्त करता है।

इस मंत्र में उपनिषद 'हृदय' शब्द के तीन अक्षरों—'हृ', 'द' और 'य' का विश्लेषण करके उनके आध्यात्मिक और मानवीय अर्थ समझाते हैं। यहाँ 'हृ' आकर्षण और मान-सम्मान प्राप्त करने से, 'द' दान और उदारता से तथा 'य' श्रेष्ठ गति प्राप्त करने से जुड़ा हुआ है।

लेकिन वेदांत के 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' के सिद्धांत के आधार पर, जब इन्हीं धातुओं को आधिभौतिक अर्थात् ब्रह्मांडीय परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया जाता है, तब हिंद फाउंडेशन हृदयम् शब्द को परम अस्तित्व की मूल सत्ता के रूप में समझने का एक विशिष्ट दार्शनिक ढाँचा प्रस्तुत करता है:

ह्र Hṛ	**हरति** — अपनी ओर खींच लेना अथवा वापस ग्रहण करना। ब्रह्मांडीय स्तर पर यह ऊर्जा के संकुचन (Withdrawal / Contraction) का प्रतीक है।
द Da	**ददाति** — बाहर की ओर देना अथवा प्रदान करना। ब्रह्मांडीय स्तर पर यह ऊर्जा के विस्तार (Expansion) का प्रतीक है।
य Ya	**याति** — गति करना अथवा गमन करना। ब्रह्मांडीय स्तर पर यह विस्तार और संकुचन के बीच की निरंतर चक्रीय गति (Cyclic Motion) का प्रतीक है।

इस प्रकार, संकुचन, विस्तार और चक्रीय गति—ये तीनों तत्त्व जिस एक मूलभूत सत्ता में समाहित हैं, उस अद्वितीय, निराकार और निर्गुण ऊर्जा को हिंद फाउंडेशन हृदयम् के रूप में पहचानता है।

हृदयम् अस्तित्व का ऐसा अद्वैत मूल तत्त्व है, जिसके भीतर अनंत ब्रह्मांड श्वास लेते और छोड़ते हैं। यही तत्त्व ब्रह्मांड में, प्रकृति में और प्रत्येक जीव के हृदय की धड़कन तथा श्वास-प्रश्वास में निरंतर अभिव्यक्त होता है।

1.2 हृदयम् की चक्रीय लय के तत्त्व और उसके साधक

हृदयम् की चक्रीय गति सृष्टि के दो महत्त्वपूर्ण चरणों को प्रकट करती है: विस्तार और संकुचन। हिंद फाउंडेशन इन दोनों चरणों को केवल ब्रह्मांडीय प्रक्रिया के रूप में ही नहीं, बल्कि मानवीय जीवन, साधना और ज्ञान के दो पूरक मार्गों के रूप में भी देखता है।

1. ब्रह्म और ब्राह्मण

हृदयम् के विस्तारित होने वाले चरण को 'ब्रह्म' के रूप में पहचाना जाता है। यह विस्तार प्रवृत्ति, अभिव्यक्ति, भौतिक सृजन और सामाजिक विकास का प्रतीक है। जो व्यक्ति इस विस्तारित होते ब्रह्म का अनुसरण करता है, उसे समझने का प्रयास करता है अथवा उसके रहस्यों का अन्वेषण करता है, वह 'ब्राह्मण' है। इस अर्थ में भौतिकशास्त्री, जीवविज्ञानी और ब्रह्मांड के सृजन तथा विकास का अन्वेषण करने वाले विद्वान भी ब्रह्म के ज्ञान के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं।

2. शर्वम् और शार्व

विस्तार का चरण पूर्ण होने के बाद, जब ऊर्जा अपने मूल की ओर वापस लौटती है और संकुचन की प्रक्रिया आरंभ होती है, तब हृदयम् के इस संकुचनशील स्वरूप को 'शर्वम्' कहा जाता है। यह 'शर्वम्' शिव के तात्त्विक आधार से जुड़ा हुआ है।

जिस प्रकार विस्तारित होते ब्रह्म के ज्ञान और अभिव्यक्ति के मार्ग का अनुसरण करने वाला ब्राह्मण है, उसी प्रकार संकुचित होते शर्वम् के मार्ग का अनुसरण करने वाला साधक 'शार्व' है। यह मार्ग निवृत्ति, वैराग्य और विलय का मार्ग है। जो अपनी चेतना को बाहरी सृजन के मोह से वापस खींचकर उसके मूल स्वरूप की ओर ले जाता है, वह शार्व है।

3. हृदयज्ञ

जो दार्शनिक अथवा साधक विस्तारित होते ब्रह्म और संकुचित होते शर्वम्—इन दोनों ब्रह्मांडीय चरणों के संपूर्ण चक्र को अपने आत्म में अनुभव कर लेता है और 'मैं ही संपूर्ण हृदयम् हूँ तथा प्रत्येक आत्मा उसी मूल अस्तित्व की अभिव्यक्ति है' ऐसी आत्मानुभूति प्राप्त करता है, वह हृदयज्ञ बनता है।

वैदिक परंपरा में जिसे ब्रह्मज्ञानी कहा गया है, उसे हिंद फाउंडेशन के इस दार्शनिक ढाँचे में हृदयज्ञ के रूप में पहचाना जाता है।

4. हृदयमूर्तम्: हृदयम् का साकार स्वरूप

हिंद पथ निर्गुण और निराकार हृदयम् की सगुण अभिव्यक्ति के रूप में वैदिक पंचदेव को स्वीकार करता है। यह संपूर्ण दृश्य ब्रह्मांड मूल ऊर्जा की सगुण और साकार अभिव्यक्ति ही है। यदि मूल ऊर्जा अपने निर्गुण-निराकार मूल स्वरूप तक ही सीमित रहती, तो इस संसार में कोई सृजन अथवा पदार्थों का प्रक्षेपण हुआ ही नहीं होता। प्रारंभिक सूक्ष्म कणों से प्रोटॉन और न्यूट्रॉन का निर्माण होकर जब हाइड्रोजन और हीलियम के परमाणु बने, तब मूल ऊर्जा सगुण अर्थात् हाइड्रोजन और हीलियम के ज्वलनशील गुणों के रूप में तथा साकार अर्थात् हाइड्रोजन गैस के उन प्रारंभिक बादलों के आकार के रूप में अभिव्यक्त हो चुकी थी। और वहाँ से यह सगुण-साकार अभिव्यक्ति तारों, ग्रहों, जल, अग्नि और वातावरण के माध्यम से आगे बढ़ते हुए वृक्षों, पशु-पक्षियों और मनुष्यों जैसी सजीव सृष्टि तक विस्तारित हुई है। इस प्रकार, जब हृदयम् किसी आध्यात्मिक और बौद्धिक रूप से विकसित मनुष्य में अपने विभिन्न गुणों और शक्तियों की पूर्ण अभिव्यक्ति के माध्यम से साकार स्वरूप धारण करता है, तब उसे हृदयमूर्तम् कहा जाता है।

हिंद फाउंडेशन इस हृदयमूर्तम् रूप में सनातन धर्म के पंचदेव की अभिव्यक्ति को स्वीकार करता है और साथ ही निर्गुण-निराकार हृदयम् की अनुभूति के लिए साधना करने वाले सच्चे साधकों में प्रकट होने वाले एक छठे गुण की अभिव्यक्ति को भी स्वीकार करके उसे आध्यात्मिक चिंतन में स्थान देता है।

1. **विष्णु:** हृदयम् की सर्वव्यापकता और स्थिति का स्वरूप।
2. **ब्रह्मा अथवा सूर्य:** हृदयम् के विस्तार अर्थात् ब्रह्म द्वारा दृश्य सृष्टि की अभिव्यक्ति और सृजन का स्वरूप।
3. **शिव:** हृदयम् के संकुचन अर्थात् शर्वम् द्वारा सृजन के विलय और पुनःसंकुचन की प्रक्रिया का स्वरूप।

4. **गणपति:** हृदयम् में विद्यमान अनुकंपा, कृपा और अनुग्रह की ऊर्जा का स्वरूप।

5. **शक्ति अथवा देवी:** हृदयम् का मूल चालक बल और उसके संपूर्ण अस्तित्व को गतिशील बनाए रखने वाला स्पंदन।

6. **निर्गुण हृदयम् की अभिव्यक्ति—प्रेम और करुणा।**

जब कोई मनुष्य योग, ध्यान, आत्मचिंतन अथवा सत्य की वैज्ञानिक खोज के माध्यम से हृदयम् के आत्मसाक्षात्कार के मार्ग पर आगे बढ़ता है, तब उसमें करुणा, अहिंसा, प्रेम और एकत्व जैसे गुणों की अभिव्यक्ति अधिक स्पष्ट होती जाती है। हिंद फाउंडेशन इन गुणों को निर्गुण-निराकार हृदयम् की मूलभूत अभिव्यक्ति के रूप में देखता है। महावीर, बुद्ध, ईसा और गांधी जैसे सत्य के तपस्वियों के जीवन में इस निर्गुण-निराकार ब्रह्म के गुणों की प्रबल अभिव्यक्ति दिखाई देती है। यदि संपूर्ण अस्तित्व एक ही मूल सत्ता अर्थात् हृदयम् की अभिव्यक्ति है, तो प्रत्येक जीव के प्रति प्रेम एक स्वाभाविक भावना बन जाता है। इसी प्रकार, अज्ञान अथवा स्वार्थ के कारण अनुचित आचरण करने वाले मनुष्य के प्रति भी द्वेष या हिंसा के बजाय करुणापूर्ण अहिंसा स्वाभाविक आचरण बन जाती है।

हिंद फाउंडेशन के दर्शन के अनुसार, हृदयम् का आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर चुका हृदयज्ञ जब अपने कारण शरीर को मोक्ष की ओर ले जाने के स्थान पर मानवजाति के प्रति करुणा के कारण पुनः स्थूल शरीर धारण करता है, तब वह मानव रूप में हृदयम् के पाँच सगुण गुणों की अभिव्यक्ति करता है। इस प्रकार निर्गुण हृदयम् की साकार अभिव्यक्ति मानवजाति के कल्याण का साधन बनती है।

किंतु हृदयम् की आत्मानुभूति करने के लिए मूल ऊर्जा की पाँच सगुण अभिव्यक्तियों के रूप में पंचदेव की उपयोगिता भक्ति मार्ग की साधना में सिद्ध होती है। हिंद फाउंडेशन यह सुनिश्चित करता है कि मनुष्य का मुख्य ध्येय इन पाँच सगुण अभिव्यक्तियों की भक्ति का सहारा लेकर अपने भीतर ही उनके निर्गुण निराकार स्वरूप 'हृदयम्' का आत्मसाक्षात्कार करना है। अर्थात् सगुण हृदयम् का हाथ थामकर निर्गुण हृदयम् की आत्मानुभूति करना ही मूल ध्येय है।

1.3 विभिन्न धार्मिक दर्शनों के अद्वैत हृदयम् के सत्य तक पहुँचने के सोपान

हिंद फाउंडेशन मानता है कि पृथ्वी पर धर्म अपने दर्शन की अपेक्षा अपने उपास्य देवताओं के आधार पर अधिक वर्गीकृत हैं। वास्तव में, सभी धर्मों के दर्शन **द्वैत** से **विशिष्टाद्वैत** और **अद्वैत** तक की क्रमिक आध्यात्मिक उन्नति दर्शाते हैं।

द्वैत का अर्थ है वह स्थिति, जहाँ जीव स्वयं को मूल तत्त्व से अलग मानता है और मूल तत्त्व को ईश्वर कहकर उसे अपना नियंता देखता है। इसके बाद जीव जैसे-जैसे अपने भीतर की हृदयम् की चेतना के अधिक निकट जाता है, वैसे-वैसे वह अनुभव करता है कि वह स्वयं मूल ऊर्जा का ही एक अंश है। यह संपूर्ण सृष्टि एक समुद्र के समान है, जिसकी वह एक बूँद है, लेकिन फिर भी बूँद के रूप में समुद्र से अलग नहीं है। वह समुद्र भी है और बूँद भी है। इस मध्यवर्ती स्थिति को **विशिष्टाद्वैत** कहते हैं।

इसके बाद अंतिम स्थिति में आध्यात्मिक उत्क्रांति होने पर जीव को अनुभूति होती है कि वह स्वयं ही समुद्र है, वह स्वयं ही हृदयम् है और संपूर्ण सृष्टि उसी से व्याप्त है। प्रत्येक स्थान पर वही मूल ऊर्जा के रूप में विद्यमान है। इस अंतिम स्थिति को **अद्वैत** की स्थिति कहते हैं।

जगत के प्रत्येक धर्म में कम या अधिक मात्रा में इसी द्वैत से विशिष्टाद्वैत और अद्वैत तक की यात्रा दर्शाने वाले समूह कार्यरत हैं। इस्लाम की मूल मान्यता और भारतीय धर्म की एक नवीन शाखा आर्यसमाज की मान्यता एक स्तर पर हैं, जहाँ मूल ऊर्जा, जीव और प्रकृति तीनों अलग-अलग हैं तथा जीव को स्वर्ग में स्थान प्राप्त करना होता है अथवा मुक्ति प्राप्त करनी होती है।

ईसाई धर्म की मूल मान्यता और भारतीय धर्म की तेरहवीं शताब्दी में विकसित द्वैत शाखा एक स्तर पर हैं, जहाँ कहा जाता है कि जो लोग ईसा अथवा कृष्ण की भक्ति में जीवन बिताते हैं, उन्हें मृत्यु के बाद सीधे स्वर्ग में ईसा के पास अथवा वैकुंठ में कृष्ण के पास साकार रूप में स्थान प्राप्त होगा। यही जीवन का लक्ष्य है।

वहीं, इस्लाम की सूफी शाखा में, प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म की कुछ शाखाओं में और भारतीय धर्म की मूल वैदिक शाखा में, साथ ही जैन और बौद्ध शाखाओं में विशिष्टाद्वैत अथवा अद्वैत का उपदेश है। इन शाखाओं में जीव मूल ऊर्जा का ही अंश है; बस, उसे भक्ति, कर्म और साधना के माध्यम से इसका अनुभव करना है।

ऐतिहासिक रूप से यह भी स्पष्ट है कि इस्लाम में अद्वैत की बात करने वाली सूफी परंपरा भारत के वेदांत के प्रभाव से अधिक विकसित हुई है और भारत में आर्यसमाज तथा माधवाचार्य की द्वैत शाखा क्रमशः इस्लाम और ईसाई धर्म के पारंपरिक केंद्रीय ढाँचे से प्रभावित प्रतीत होती हैं।

भारतीय धर्म के छह वैदिक दर्शनों में कहीं भी ऐसा द्वैतवाद नहीं है, जिसमें जीव और मूल ऊर्जा अलग हों। कुछ लोग सांख्य दर्शन के पुरुष और प्रकृति को गलत रूप से द्वैतवाद कहने का प्रयास करते हैं, लेकिन यह पूरी तरह गलत है, क्योंकि माधवाचार्य का द्वैतवाद जीव और मूल ऊर्जा को अलग देखने का विचार है। जबकि सांख्य दर्शन में जीव और मूल ऊर्जा पुरुष के रूप में एक ही हैं। सांख्य दर्शन में मूल ऊर्जा रूपी पुरुष को प्रकृति से अलग होकर अथवा उससे ऊपर उठकर अपने चैतन्य स्वरूप का साक्षात्कार करने का उपदेश है।

छह वैदिक दर्शनों में कहीं भी ऐसा द्वैतवाद देखने को नहीं मिलता, जिसमें साकार ईश्वर अलग और जीव अलग हों। यह तेरहवीं शताब्दी में दक्षिण भारत में सदियों से स्थायी रूप से स्थापित हो चुके ईसाई और इस्लाम धर्मों के संपर्क से माधवाचार्य द्वारा उत्पन्न की गई, वैदिक ईश्वरों के नाम और शास्त्रीय शब्दों वाली एक अर्वाचीन शाखा है। ऐसा ही सुधारवादी आंदोलन के रूप में उन्नीसवीं शताब्दी में विकसित आर्यसमाज संस्था के दर्शन में भी है।

इस प्रकार, जगत के सभी धर्मों के अनुयायियों के बीच होने वाला संघर्ष आध्यात्मिक दर्शन से कम और उपास्य ईश्वर के नाम से अधिक जुड़ा हुआ है। हिंद फाउंडेशन इसे मानवजाति में व्याप्त मूल स्वार्थ और अहंकार की ही उपज मानता है। इन स्वार्थ और अहंकार को दूर करने की साधना ही उन धर्मों का आध्यात्मिक दर्शन दर्शाती है।

इसी कारण हिंद फाउंडेशन मानवजाति को उपास्य ईश्वर की पूर्ण स्वतंत्रता देकर, द्वैत से विशिष्टाद्वैत और अद्वैत तक पहुँचने की आध्यात्मिक यात्रा के मार्ग पर एक साथ चलाने का लक्ष्य रखता है, जहाँ कोई भी मनुष्य अपने उपास्य ईश्वर को दूसरे मनुष्य पर थोपेगा नहीं।

यहाँ हिंद फाउंडेशन वैदिक धर्म के सगुण-साकार पंचदेव—गणेश, विष्णु, ब्रह्मा, शिव और शक्ति—को एक ही उपास्य देव मानता है, क्योंकि वे एक ही निर्गुण-निराकार ईश्वर परब्रह्म (जिसे ॐ स्वरूप में दर्शाया जाता है) के पाँच सगुण रूप हैं। इस कारण, इन पाँच अभिव्यक्तियों में से किसी एक को अपना आराध्य ईश्वर मानने वाले मनुष्य वैदिक धर्म के स्वरूप और शास्त्रों के अनुसार शेष चार को अपने आराध्य का अंश मान सकेंगे, लेकिन यह छूट वैदिक धर्म से बाहर के किसी अन्य धर्म को मानने वाले मनुष्य को वैदिक ॐ अथवा पंचदेव के लिए नहीं होगी।

1.4 हृदयम् की अनुभूति के लिए दो मार्ग

हिंद फाउंडेशन हृदयम् के सत्य को समझने और उसकी अनुभूति प्राप्त करने के लिए दो पूरक मार्गों को स्वीकार करता है:

- **आंतरिक मार्ग – आत्मसाक्षात्कार।** ध्यान, योग, प्राणायाम, आत्मानुभूति और आत्मचिंतन के माध्यम से हृदयम् को अपने अस्तित्व में अनुभव करने का मार्ग।
- **बाह्य मार्ग – वैज्ञानिक अन्वेषण।** विज्ञान, गणित, तर्क, अवलोकन और प्रयोगों के माध्यम से संपूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त हृदयम् की कॉस्मिक लय को समझने का मार्ग।

हिंद फाउंडेशन के लिए सत्य कोई बंद, स्थिर अथवा अपरिवर्तनीय मान्यता नहीं है। सत्य को निरंतर अन्वेषण, परीक्षण, शुद्धिकरण और नई खोज के लिए खुला रहना चाहिए।

इसलिए हिंद पथ वास्तविकता के अन्वेषण के लिए दो पूरक पद्धतियों को स्वीकार करता है:

- **आंतरिक अन्वेषण:** योग, ध्यान, आत्म-जिज्ञासा, चिंतनशील अभ्यास, वेदांतिक जाँच और चेतना का प्रत्यक्ष अवलोकन।
- **बाह्य अन्वेषण:** विज्ञान, गणित, तर्क, अवलोकन, प्रयोग और तकनीकी नवाचार।

ये दोनों दृष्टिकोण एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। वे वास्तविकता के अलग-अलग आयामों का अन्वेषण करने वाली पूरक पद्धतियाँ हैं। अंतःकरण की स्वतंत्रता अदम्य है।

हिंद फाउंडेशन मानता है कि आंतरिक अन्वेषण से प्राप्त आध्यात्मिक अनुभूतियाँ बाह्य वैज्ञानिक अन्वेषण को नए प्रश्न और अनुसंधान की नई दिशाएँ दे सकती हैं। ऐसी अनुभूतियाँ वैज्ञानिकों को भौतिकी और गणित के स्वीकृत सिद्धांत, मॉडल और समीकरण विकसित करने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

उसी प्रकार, विज्ञान के निष्कर्ष आंतरिक अनुभूतियों और आध्यात्मिक दावों की अधिक गहन जाँच का माध्यम बन सकते हैं। इस प्रकार, हृदयम् की खोज में अध्यात्म और विज्ञान एक-दूसरे के विकल्प नहीं, बल्कि सत्य की साझा खोज के दो पूरक मार्ग हैं।

2. पूर्णता की अनुभूति और मानव कल्याण

श्रीमद्भागवत में ब्रह्मांड की मूल ऊर्जा की चक्रीय गति को महाविष्णु के श्वास-प्रश्वास के रूपक के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। यह दृष्टांत सृष्टि के सृजन और विलय को एक निरंतर लयबद्ध प्रक्रिया के रूप में समझाता है।

अस्तित्व का यह अंतिम सत्य मनुष्य को जीवित रखने वाली दो मूलभूत शारीरिक प्रक्रियाओं से भी प्रतीकात्मक रूप से जुड़ा हुआ है: हृदय का संकुचन और विस्तार तथा फेफड़ों का संकुचन और विस्तार, अर्थात् श्वास-प्रश्वास।

जब मनुष्य अपने हृदय के स्पंदनों और श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया में स्थिर होकर अपने अस्तित्व को हृदयम् की लय के साथ एकरूप अनुभव करता है, तब उसके भीतर पूर्णता का भाव जागृत होता है।

हिंद फाउंडेशन के दर्शन के अनुसार, हिंसा, छल-कपट, अपराध, गरीबी से लेकर ग्लोबल वार्मिंग जैसी मानवजाति और प्रकृति को प्रभावित करने वाली अनेक समस्याओं के मूल में मनुष्य की अपूर्णता की भावना, असंतोष और अनियंत्रित इच्छाएँ निहित हैं। हृदयम् की अनुभूति अपूर्णता के इस भ्रम को दूर करके मनुष्य को अपने अस्तित्व की पूर्णता स्वीकार कराती है।

यह अनुभूति मनुष्य को केवल आंतरिक शांति ही नहीं देती, बल्कि उसके भीतर एक और गहरी जिम्मेदारी भी उत्पन्न करती है: अपने अस्तित्व की तरह ही अन्य मनुष्यों, संपूर्ण प्रकृति और ब्रह्मांड का संवर्धन करना।

हिंद फाउंडेशन की दार्शनिक शाखा 'द हिंद वे' (The Hind Way), जिसे भारतीय भाषाओं में 'हृदयमार्ग' के रूप में भी जाना जाएगा, मनुष्य को अपने भीतर निरंतर चल रही हृदयम् की लय में ध्यानस्थ रहकर अपनी अंतिम पूर्णता को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है।

जब मनुष्य अपने भीतर ही पूर्णता का अनुभव करता है, तब बाहरी संसार से कुछ प्राप्त करके स्वयं को पूर्ण करने की उसकी दौड़ समाप्त होने लगती है। वह अपने अस्तित्व में हृदयम् की लय के साथ स्थित हो जाता है। ऐसी स्थिति में संसार के प्रति मनुष्य की जिम्मेदारी कम नहीं होती; इसके विपरीत, और अधिक गहन हो जाती है।

इसके बाद उसका प्रत्येक सांसारिक कार्य व्यक्तिगत स्वार्थ, लालसा अथवा कुछ प्राप्त करने की अपेक्षा से नहीं, बल्कि हृदयम् की लय के प्रति स्वाभाविक दायित्व-बोध से प्रेरित होता है।

भगवद्गीता का उपदेश—'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन', अर्थात् कर्म करने का अधिकार है, लेकिन फल पर अधिकार नहीं—इसी दार्शनिक भावना को व्यक्त करता है।

हिंद फाउंडेशन की व्याख्या के अनुसार, केवल कुछ प्राप्त करने के लिए कर्म करना अज्ञान का परिणाम है। ऐसी प्रवृत्ति व्यक्तिगत असंतोष, प्रतिस्पर्धा, संघर्ष और अंततः व्यक्ति तथा संपूर्ण जगत की पीड़ा का कारण बन सकती है।

इसके स्थान पर यदि प्रत्येक मनुष्य अपने अस्तित्व में हृदयम् की लय के माध्यम से पूर्णता का अनुभव करे और उस लय के प्रति अपने स्वाभाविक दायित्व के रूप में कर्म करे, तो समाज में पारस्परिक सहयोग, स्वतंत्रता, करुणा और जिम्मेदारी पर आधारित व्यवस्था विकसित होती है।

ऐसी व्यवस्था किसी बाहरी सत्ता द्वारा थोपी नहीं जाती। वह व्यक्ति की आंतरिक पूर्णता से स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती है। हिंद फाउंडेशन इसी सामाजिक और मानवीय व्यवस्था को प्राकृतिक लोकतंत्र (Natural Democracy) के रूप में पहचानता है।

2.1 पूर्णता, त्याग और अस्तित्व का एकत्व

इस संपूर्ण दर्शन के दार्शनिक सार के रूप में ईशावास्य उपनिषद के प्रथम दो मंत्र महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

पहले मंत्र में पूर्ण अस्तित्व से अभिव्यक्त हुए प्रत्येक अंश की पूर्णता का तत्त्व प्रकट होता है:

ईशावास्य उपनिषद · मंत्र 1

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

इस मंत्र का भावार्थ यह है कि परम अस्तित्व पूर्ण है और उससे अभिव्यक्त हुआ यह अस्तित्व भी पूर्ण है। पूर्ण से पूर्ण की अभिव्यक्ति होने पर भी मूल पूर्णता में कोई कमी नहीं आती।

हिंद फाउंडेशन इस तत्त्व को हृदयम् के दर्शन से जोड़कर देखता है: संपूर्ण हृदयम् पूर्ण है और उससे अभिव्यक्त प्रत्येक आत्मा भी अपने मूल स्वरूप में उतनी ही पूर्ण है।

ईशावास्य उपनिषद का दूसरा मंत्र इस पूर्णता की व्यावहारिक जीवन में होने वाली स्वीकृति को त्याग से जोड़ता है:

ईशावास्य उपनिषद · मंत्र 2

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

इस मंत्र का सार यह है कि संपूर्ण जड़ और चेतन सृष्टि एक ही परम अस्तित्व से व्याप्त है। जब संपूर्ण अस्तित्व में एक ही मूल तत्त्व की अनुभूति होती है, तब जीवन में भोग का श्रेष्ठ मार्ग त्याग बन जाता है।

यहाँ त्याग का अर्थ जीवन का अस्वीकार अथवा जिम्मेदारियों से पलायन नहीं है। इसका अर्थ है—दायित्व के रूप में जो प्राप्त हो, उसे स्वीकार करना, लेकिन अपनी पूर्णता के लिए बाहरी दौड़ की ओर ले जाने वाली व्यक्तिगत लालसाओं का त्याग करना।

क्योंकि पूर्णता बाहर से प्राप्त करने की वस्तु नहीं है; वह मनुष्य के अपने अस्तित्व में, हृदयम् की लय में ही विद्यमान है।

3. धर्म और सांप्रदायिकता के बारे में हिंद फाउंडेशन का दृष्टिकोण

हिंद फाउंडेशन स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के विचारों में निहित सत्य की खोज, आध्यात्मिक अनुभूति और मानवीय एकता की भावना को अपने दार्शनिक दृष्टिकोण का महत्त्वपूर्ण आधार मानता है।

हिंद फाउंडेशन के लिए धर्म का मूल सार सत्य की खोज और उसकी अनुभूति है। धर्म का उद्देश्य मनुष्य को किसी एक सांप्रदायिक पहचान में बाँधना नहीं, बल्कि उसे सत्य के निकट ले जाना होना चाहिए।

जवाहरलाल नेहरू आध्यात्मिक सत्य की खोज को धर्म का मूलभूत पक्ष मानते थे। स्वामी विवेकानंद के विचारों का अनुसरण करते हुए वे आधुनिक विज्ञान को भी सत्य की खोज का एक महत्त्वपूर्ण मार्ग मानते थे। इस दृष्टिकोण से वैज्ञानिक अन्वेषण को भारतीय आध्यात्मिक परंपरा से बाहर की गतिविधि मानने के बजाय सत्य की खोज के एक स्वीकार्य मार्ग के रूप में देखने की संभावना उत्पन्न होती है।

इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद और जवाहरलाल नेहरू के विचारों में अध्यात्म और विज्ञान—सत्य की खोज के दो पूरक मार्गों के रूप में स्वीकार्य बनते हैं। हिंद फाउंडेशन भी इन दोनों मार्गों को एक साथ स्वीकार करके सत्य की खोज के माध्यम से संपूर्ण मानवजाति को एक करने के उद्देश्य से आगे बढ़ता है।

इस दस्तावेज़ के पूर्ववर्ती खंडों में स्पष्ट किए गए हृदयम् के दर्शन तथा आंतरिक और बाह्य अन्वेषण के दोनों मार्गों के माध्यम से हिंद फाउंडेशन भारतीय धर्म का ऐसा स्वरूप विश्व के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता है, जिसमें आध्यात्मिक अनुभूति और वैज्ञानिक परीक्षण—दोनों को समान महत्त्व प्राप्त हो।

3.1 धर्मांतरण नहीं, आध्यात्मिक समृद्धि

सत्य की साझा खोज के माध्यम से मानवजाति को एक करने के अपने उद्देश्य के अनुरूप हिंद फाउंडेशन धर्मांतरण की गतिविधि को अस्वीकार करता है।

शिकागो की विश्व धर्म संसद में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी विवेकानंद ने जो मूलभूत भावना व्यक्त की थी, उसका सार यह था कि वे किसी ईसाई को हिंदू बनाने अथवा किसी मेथोडिस्ट को हिंदू बनाने नहीं आए थे। वे हिंदू धर्म के आध्यात्मिक सिद्धांतों को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने आए थे, ताकि एक ईसाई और बेहतर ईसाई बन सके तथा सत्य की अनुभूति कर सके। अंतिम सत्य की अनुभूति ही मानवजाति को एक कर सकती है।

महात्मा गांधी ने भी अपने ईसाई मित्र चार्ली के साथ संवाद में यही भावना व्यक्त की थी। उनका दृष्टिकोण यह था कि उनका कार्य चार्ली को ईसाई से हिंदू बनाना नहीं है और चार्ली का कार्य उन्हें हिंदू से ईसाई बनाना नहीं है। इसके बजाय, गांधीजी हिंदू धर्म के सिद्धांतों के माध्यम से चार्ली को एक बेहतर ईसाई बनने में सहायता करना चाहते थे और चार्ली ईसाई धर्म के सिद्धांतों के माध्यम से गांधीजी को एक बेहतर हिंदू बनने में सहायता कर सकते थे। दोनों का उद्देश्य एक-दूसरे को अपने धर्म में परिवर्तित करना नहीं, बल्कि एक-दूसरे को आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करना था।

विवेकानंद और गांधीजी के इस दृष्टिकोण को स्वीकार करते हुए हिंद फाउंडेशन धर्मांतरण को धर्म अथवा अध्यात्म की स्वाभाविक गतिविधि के रूप में नहीं देखता। इसके बजाय, जब धर्म के नाम पर समूहबंदी, सामाजिक प्रभाव और राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने के लिए धर्मांतरण का उपयोग किया जाता है, तब वह इसे एक अवांछनीय सामाजिक-राजनीतिक प्रवृत्ति के रूप में देखता है।

हिंद फाउंडेशन के मतानुसार, ईश्वर, धर्म अथवा अध्यात्म के नाम पर मनुष्यों को अलग-अलग समूहों में बाँटकर उन पर प्रभुत्व स्थापित करने का कोई भी प्रयास सत्य की खोज और मानवीय एकता के मूलभूत उद्देश्य के विपरीत है।

विश्व के किसी भी संगठित धर्म अथवा संप्रदाय की सामाजिक या धार्मिक व्यवस्था में यदि कोई मनुष्य कानूनी रूप से मान्य स्वतंत्रता से वंचित हो, दासता जैसी स्थिति में जीवन जी रहा हो अथवा उसकी अंतःकरण की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध हो, तो उसे उस व्यवस्था को छोड़कर हिंद पथ के स्वतंत्र हृदयमार्ग से अध्यात्म और विज्ञान के माध्यम से सत्य की खोज करने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

हिंद फाउंडेशन के हृदयमार्ग में विश्व के विभिन्न धर्मों के आध्यात्मिक पक्षों और आधुनिक विज्ञान—दोनों को सत्य की खोज के मानदंड पर समझा, परखा और जाँचा जाता है तथा जो उचित प्रतीत हो, उसे स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार, विश्व की विभिन्न आध्यात्मिक परंपराओं के सिद्धांतों तथा वैज्ञानिक ज्ञान को हृदयम् की आत्मानुभूति के परिप्रेक्ष्य में जानने, समझने और परखने का प्रयास किया जाता है।

3.2 सत्य किसी एक परंपरा की संपत्ति नहीं है

हिंद फाउंडेशन सभी धर्मों, दर्शनशास्त्रों, आध्यात्मिक परंपराओं और नैतिक व्यवस्थाओं को ऐसे संभावित मार्गों के रूप में पहचानता है, जो सत्य की ओर ले जा सकते हैं। व्यक्ति अपनी स्वतंत्र बुद्धि, विवेक और अनुभूति के माध्यम से इन परंपराओं में से सत्य की खोज कर सकता है।

किसी परंपरा को केवल इसलिए अस्वीकार नहीं किया जाएगा कि वह किसी दूसरी परंपरा से अलग है। विभिन्न विचारों, मान्यताओं और अन्वेषण की पद्धतियों के प्रति सम्मान रखना एक सभ्य समाज का मूलभूत सिद्धांत है।

हिंद फाउंडेशन इस मान्यता को स्वीकार नहीं करता कि किसी एक व्यक्ति, संस्था, ग्रंथ, पैगंबर अथवा धार्मिक परंपरा के पास ही सत्य या मुक्ति तक पहुँचने का विशिष्ट अधिकार है। सत्य किसी एक मानवीय रचना, संस्था अथवा सांप्रदायिक ढाँचे से कहीं अधिक व्यापक है।

इसलिए हिंद फाउंडेशन व्यक्ति पर किसी एक निश्चित धार्मिक पहचान को स्वीकार करने का दबाव नहीं डालता। वह प्रत्येक मनुष्य को अपने विवेक से विचार करने, प्रश्न पूछने, अपनी मान्यताओं की समीक्षा करने और आवश्यकता पड़ने पर किसी भी परंपरा को छोड़ने अथवा उससे आगे बढ़ने की पूर्ण स्वतंत्रता देता है।

3.3 धर्मांतरण, जबरदस्ती और कानून का शासन

हिंद फाउंडेशन अपने धार्मिक अथवा सांप्रदायिक मार्ग को अन्य मनुष्यों पर थोपने और उन्हें अपने संगठित धर्म अथवा संप्रदाय में धर्मांतरित करने के प्रयासों का विरोध करता है।

हिंद फाउंडेशन का प्रस्ताव है कि जबरदस्ती, धोखाधड़ी, प्रलोभन, सामाजिक दबाव अथवा अन्यायपूर्ण प्रभाव के माध्यम से किए जाने वाले धर्मांतरण को कानूनी अपराध माना जाए और उसका सामना संवैधानिक तथा कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से किया जाए।

साथ ही, नागरिकों के विभिन्न धार्मिक समूहों को आमने-सामने लाकर सामाजिक तनाव अथवा संघर्ष उत्पन्न करने वाली किसी भी संगठित गतिविधि को लोकतांत्रिक व्यवस्था के विरुद्ध माना जाता है।

धार्मिक गुटबाजी, धार्मिक भ्रष्टाचार, अंधविश्वास, लालच अथवा उत्पीड़न के कारण होने वाले धर्मांतरण और धर्म के नाम पर होने वाले सत्ता के केंद्रीकरण को रोकने के लिए हिंद फाउंडेशन कानून के शासन को निरंतर अधिक प्रभावी बनाने की अनुशंसा करता है। ऐसे प्रश्नों का समाधान नागरिकों के बीच संघर्ष के माध्यम से नहीं, बल्कि निष्पक्ष कानूनी व्यवस्था और संवैधानिक प्रक्रिया के माध्यम से होना चाहिए।

4. वर्ण और जाति के बारे में हिंद फाउंडेशन का दृष्टिकोण

हिंद फाउंडेशन भारतीय समाज में जन्म-आधारित वर्णव्यवस्था के प्रवेश को मानवीय स्वार्थ के कारण उत्पन्न हुई एक अनैतिक सामाजिक विकृति के रूप में देखता है।

हिंद फाउंडेशन वर्ण को गुण और कर्म—इन दो तत्त्वों के आधार पर समझने की भारतीय दार्शनिक परंपरा को स्वीकार करता है। इनमें गुण प्राथमिक है और कर्म, गुण का अनुसरण करने वाला तत्त्व है। अर्थात् मनुष्य का स्वभाव, प्रवृत्ति और आंतरिक गुणधर्म उसके कर्मक्षेत्र को प्रभावित करते हैं।

लेकिन हिंद फाउंडेशन गुण और कर्म के आधार पर भी वर्ण-आधारित समाजव्यवस्था को पुनः स्थापित करने के विचार का विरोध करता है। इसका कारण यह है कि भारतीय समाज की परिवार-केंद्रित जीवन-पद्धति में मानवीय स्वार्थ और सामाजिक सत्ता के प्रभाव के कारण वर्णव्यवस्था बार-बार वंशानुगत जाति-व्यवस्था में परिवर्तित होती रही है।

इसलिए हिंद फाउंडेशन भारत सहित पूरे विश्व की मानवजाति के लिए भारतीय दर्शन के चार पुरुषार्थों पर आधारित समाजव्यवस्था की अनुशंसा करता है।

इस व्यवस्था के अनुसार शिक्षा-व्यवस्था, राज्य-व्यवस्था और समाज-व्यवस्था को **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष**—इन चार पुरुषार्थों के क्षेत्रों में विभाजित करके व्यवस्थित किया जा सकता है। प्रत्येक मनुष्य को अपने गुण, स्वभाव, क्षमता और रुचि के अनुसार इनमें से किसी एक या एक से अधिक क्षेत्रों में अपना योगदान देने के लिए स्वतंत्र और गतिशील अवसर मिलना चाहिए। समाज के विभिन्न व्यवसायों, गतिविधियों और संस्थाओं को उनके कार्य के मूलभूत उद्देश्य के अनुसार इन चार क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. अर्थ ध्येयक्षेत्र (आर्थिक उद्देश्य)

व्यापार-वाणिज्य के सभी क्षेत्र, कृषि, पशुपालन, उद्योग, विनिर्माण और आर्थिक उपार्जन से जुड़े अन्य सभी व्यवसाय अर्थ ध्येयक्षेत्र के अंतर्गत आएँगे। इस क्षेत्र का मुख्य कार्य समाज और राष्ट्र के लिए आर्थिक संपत्ति, उत्पादन और समृद्धि का सृजन करना है। परंपरागत रूप से वैश्य गुण से जुड़े सभी व्यवसायों को इस ध्येयक्षेत्र में स्थान मिलेगा।

2. धर्म ध्येयक्षेत्र (शासन और कर्तव्य का उद्देश्य)

राष्ट्र की रक्षा से लेकर राज्य-व्यवस्था के संचालन तक के सभी कार्य और व्यवसाय धर्म ध्येयक्षेत्र के अंतर्गत आएँगे। इस क्षेत्र में सभी सरकारी नौकरियाँ शामिल होंगी—सफाई कर्मचारी और चपरासी से लेकर क्लर्क और कलेक्टर तक के सभी पद इस क्षेत्र का हिस्सा माने जाएँगे। इसके अतिरिक्त, राजनेता, राजनीतिक दल, सामाजिक और राजनीतिक कार्य करने वाले संगठन तथा लोक प्रशासन और राष्ट्र-संचालन से जुड़ी सभी गतिविधियाँ भी इस ध्येयक्षेत्र में आएँगी। इस क्षेत्र का मुख्य कार्य समाज और राष्ट्र की व्यवस्था, सुरक्षा, न्याय तथा सामूहिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना है।

3. काम ध्येयक्षेत्र (सृजनात्मक और कलात्मक उद्देश्य)

नाट्यकला, संगीत, चित्रकला, साहित्य-लेखन, काव्य-लेखन, शिल्पकला, फिल्म उद्योग के लिए आवश्यक विभिन्न कलाएँ तथा अन्य सभी सृजनात्मक और कलात्मक गतिविधियाँ काम ध्येयक्षेत्र के अंतर्गत आएँगी। यह क्षेत्र मानवजीवन की सृजनात्मक अभिव्यक्ति, सौंदर्यबोध, भाव-जगत और सांस्कृतिक समृद्धि से जुड़ा रहेगा।

4. मोक्ष ध्येयक्षेत्र (सत्य की खोज और मुक्ति का उद्देश्य)

सृष्टि, ब्रह्मांड और संसार के सत्य की खोज के लिए किए जाने वाले सभी वैज्ञानिक, दार्शनिक और शोध कार्य 'मोक्ष' ध्येयक्षेत्र के अंतर्गत आएँगे। गणित, भौतिकशास्त्र, खगोलशास्त्र, जीवविज्ञान, रसायनशास्त्र, मनोविज्ञान, आयुर्विज्ञान, जेनेटिक इंजीनियरिंग और चिकित्सा विज्ञान में शोध करने वाली इकाइयाँ तथा संस्थान इस क्षेत्र में आएँगे। इसके साथ ही प्राचीन भारत के योग, अध्यात्म और शास्त्रों के अध्ययन तथा शोध के लिए नए संस्थान स्थापित किए जाएँ और उन्हें भी मोक्ष ध्येयक्षेत्र के अंतर्गत स्थान दिया जाए। विश्व के अन्य पंथों और उनकी आध्यात्मिक तथा दार्शनिक परंपराओं के अध्ययन और शोध को भी इस क्षेत्र में शामिल किया जाए।

ISRO, DRDO जैसी संस्थाओं के ब्रह्मांड और अंतरिक्ष संबंधी शोध कार्य भी इसी ध्येयक्षेत्र का हिस्सा माने जाएँगे। जबकि इन संस्थाओं के रक्षा क्षेत्र संबंधी शोध तथा हथियारों और उपग्रह सेवाओं का अन्य देशों के साथ व्यापार 'धर्म' क्षेत्र और 'अर्थ' क्षेत्र में आएगा।

इस प्रकार, सच्चे आत्मज्ञानी योगियों, आध्यात्मिक ज्ञानियों और प्राचीन शास्त्रों के जानकारों को आधुनिक वैज्ञानिकों और अनुसंधानकर्ताओं के साथ एक ही ध्येयक्षेत्र में जोड़कर सृष्टि, ब्रह्मांड और संसार के सत्य की खोज के कार्य को सर्वोच्च महत्त्व दिया जाना आवश्यक है। इस व्यवस्था में सच्चे आध्यात्मिक योगियों, ज्ञानियों और संतों को मूल रूप से धर्म ध्येयक्षेत्र के व्यक्ति नहीं, बल्कि मोक्ष ध्येयक्षेत्र के व्यक्ति माना जाएगा। यह वर्गीकरण 'धर्म' और 'मोक्ष'—दोनों शब्दों के मूलभूत अर्थों और उनके अलग-अलग ध्येयों के अनुरूप है।

चार पुरुषार्थों पर आधारित इस व्यवस्था में किसी व्यवसाय या कार्य को व्यक्ति के जन्म, जाति अथवा पारंपरिक सामाजिक स्थान के आधार पर नहीं, बल्कि उसके वास्तविक उद्देश्य और कार्यक्षेत्र के आधार पर स्थान दिया जाएगा। प्रत्येक मनुष्य को अपनी क्षमता, गुण, स्वभाव, रुचि और पुरुषार्थ के अनुसार इनमें से किसी एक या एक से अधिक ध्येयक्षेत्रों से जुड़ने और अपना योगदान देने की स्वतंत्रता होगी।

ऐसी व्यवस्था मनुष्य को जन्म के आधार पर किसी निश्चित सामाजिक स्थान में बाँधकर रखने के बजाय उसकी व्यक्तिगत क्षमता और स्वभाव को महत्त्व देती है। परिणामस्वरूप, मनुष्य और मनुष्य के बीच जन्म के आधार पर ऊँच-नीच उत्पन्न करने वाली सामाजिक व्यवस्थाओं को समाप्त करने का मार्ग खुलता है।

हिंद फाउंडेशन वर्ण को पूरी तरह से मनुष्य का व्यक्तिगत विषय मानता है। प्रत्येक मनुष्य अपने पुरुषार्थ के माध्यम से अपने प्रारब्ध को चुनौती देने, बदलने अथवा स्वीकार करने की पूर्ण स्वतंत्रता रखता है।

> कोई व्यक्ति शूद्र है, वैश्य है, क्षत्रिय है या ब्राह्मण है—यह निर्धारित करने का अधिकार समाज के किसी व्यक्ति, समूह या संस्था को नहीं है। यह उसकी अपनी अनुभूति, स्वभाव, विवेक और आंतरिक मंथन का विषय है।

4.1 हिंदू समाज और विद्य समाज

हिंद फाउंडेशन 'हिंदू समाज' की व्यापक पहचान में वैदिक धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म का अनुसरण करने वाले मनुष्यों को शामिल करता है। इसके अतिरिक्त, वेदों में अपनी जड़ें दर्शाने वाली आर्य समाज और ब्रह्मो समाज जैसी सुधारवादी धार्मिक-सामाजिक संस्थाओं से जुड़े लोगों को भी इस व्यापक भारतीय धार्मिक-सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा मानता है।

वैदिक धर्म का अनुसरण करने वाले हिंदू समाज में पारंपरिक ब्राह्मण जाति के समाज को हिंद फाउंडेशन '**विद्य समाज**' के रूप में पहचान देने का प्रस्ताव करता है। विद्याएँ प्राप्त करने वाले, उनका संरक्षण करने वाले और समाज में उनका प्रसार करने वाले लोगों का समाज अर्थात् विद्य समाज।

हिंद फाउंडेशन हिंदू धर्म के धार्मिक अवसरों, विधियों और परंपराओं में कर्मकांड, पूजा-पाठ, यज्ञ तथा धार्मिक मार्गदर्शन की जिम्मेदारी विद्य समाज को सौंपने की परंपरा को स्वीकार करता है।

लेकिन इस स्वीकृति के साथ एक मूलभूत अंतर स्पष्ट किया जाता है: यह विद्य समाज का **दायित्व** है, **एकाधिकार नहीं**।

यह दायित्व संपूर्ण शेष हिंदू समाज द्वारा विद्य समाज को सौंपा गया है। इसलिए इस दायित्व के प्रति जिम्मेदारी, कृतज्ञता और सेवाभाव विद्य समाज में सदैव बने रहने चाहिए।

इसके साथ ही हिंद फाउंडेशन वैदिक हिंदू समाज की किसी भी अन्य जाति अथवा सामाजिक वर्ग के व्यक्ति को भी कर्मकांड, पूजा-पाठ, यज्ञ और पुरोहिताई करने का अधिकार स्वीकार करता है, यदि संबंधित धार्मिक समाज और उसके सदस्य उसे स्वीकार करते हों तथा उस व्यक्ति के पास इस कार्य के लिए आवश्यक ज्ञान, योग्यता और दक्षता हो।

इस प्रकार, हिंद फाउंडेशन विद्य समाज को कर्मकांड, आचार्य पद और यज्ञ आदि की पारंपरिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने का विशेष अधिकार दायित्व की भावना से सौंपना चाहता है; लेकिन यह भी उतना ही महत्त्वपूर्ण मानता है कि यह अधिकार किसी भी परिस्थिति में एकाधिकार अथवा वंशानुगत विशेषाधिकार में परिवर्तित न हो।

इसलिए हिंदू समाज को अपने विवेक, श्रद्धा और स्वानुभूति के आधार पर किसी भी अन्य सामाजिक वर्ग के योग्य, ज्ञानी और उत्कृष्ट व्यक्ति को पुरोहित अथवा कर्मकांड करने वाले व्यक्ति के रूप में स्वीकार करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए।

5. हिंदू राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीयवाद के बारे में हिंद फाउंडेशन का दृष्टिकोण

'भारत एक हिंदू राष्ट्र है' अथवा 'भारत हिंदू राष्ट्र नहीं है'—इन दोनों कथनों के अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं। इस प्रश्न को समझने के लिए हिंद फाउंडेशन सबसे पहले भारत की ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान स्पष्ट करता है।

हिंद फाउंडेशन भारत को वैदिक धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म की जन्मभूमि तथा उनकी मूल पितृभूमि के रूप में देखता है। इन चारों धर्मों की ऐतिहासिक और आध्यात्मिक उत्पत्ति भारत की भूमि से जुड़ी हुई है।

इस संदर्भ में कई विचारशील लोगों को 'मातृभूमि' और विनायक दामोदर सावरकर द्वारा प्रचलित किए गए 'पितृभूमि' शब्दों के बीच का संबंध समझने में उलझन होती है। हिंद फाउंडेशन इन दोनों शब्दों को अपने विशिष्ट परिप्रेक्ष्य में परिभाषित करता है।

- **मातृभूमि** अर्थात् वह भूमि जहाँ व्यक्ति का अपना जन्म हुआ हो और जिस भूमि को वह अपनी भूमि के रूप में स्वीकार करता हो।
- **पितृभूमि** अर्थात् वह भूमि जहाँ व्यक्ति के पूर्वज निवास करते रहे हों, जहाँ उसकी वंशानुगत जड़ें और पुश्तैनी घर हों।

इस परिभाषा के अनुसार, भारत में जन्मे और निवास करने वाले लोगों की मातृभूमि और पितृभूमि दोनों भारत हैं।

लेकिन जिन भारतीय परिवारों के माता-पिता भारत से बाहर किसी अन्य देश में जाकर स्थायी रूप से बस गए हों और उस देश को अपनी भूमि के रूप में स्वीकार कर चुके हों, उनकी संतानों के लिए वह देश मातृभूमि बन सकता है, जबकि भारत उनकी पितृभूमि बना रहता है।

5.1 भारत: संपूर्ण मानवजाति के लिए खुली भूमि

हिंद फाउंडेशन महात्मा गांधी के उस विचार को अपने दृष्टिकोण का मूलभूत आधार मानता है, जिसमें वे कहते हैं कि वे विश्व की प्रत्येक संस्कृति और धर्म के प्रतिनिधियों का भारत में स्वागत करना चाहते हैं, लेकिन भारत में किसी भी संस्कृति का दास बनकर रहना उन्हें स्वीकार्य नहीं है।

इस भावना को स्वीकार करते हुए हिंद फाउंडेशन मानता है कि भारत के द्वार विश्व के सभी धर्मों, संस्कृतियों और मानव समुदायों के लिए खुले होने चाहिए। भारत संपूर्ण मानवजाति के लिए खुली भूमि है।

लेकिन इस अंतरराष्ट्रीय उदारता के साथ हिंद फाउंडेशन एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सत्य भी स्पष्ट करता है: भारत वैदिक धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म की जन्मभूमि है। इन चार धर्मों को जवाहरलाल नेहरू ने 'चार आर्य धर्मों' के रूप में पहचाना था।

हिंद फाउंडेशन का प्रस्ताव है कि भारत देश और उसका संविधान इन चार धर्मों की वैश्विक संरक्षक की भूमिका को स्वीकार करें। अर्थात् इन चार धर्मों का अनुसरण करने वाले मनुष्यों के धार्मिक और सांस्कृतिक अस्तित्व का संरक्षण करने की जिम्मेदारी भारत अपनी संवैधानिक नीति का एक हिस्सा बनाए।

इस प्रस्ताव के अनुसार, इन चार धर्मों के अनुयायी विश्व के किसी भी देश की नागरिकता रखते हों, लेकिन उनकी धार्मिक पहचान के कारण यदि विश्व के किसी भी देश में उन पर अत्याचार, उत्पीड़न अथवा उनके अस्तित्व पर खतरा उत्पन्न हो, तो भारत को उनके अधिकारों और सुरक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठानी चाहिए।

हिंद फाउंडेशन की अनुशंसा है कि ऐसी परिस्थितियों में उन्हें भारत की नागरिकता प्रदान करके भारत की भूमि पर पुनः सुरक्षित स्थान प्राप्त करने का अवसर देने की व्यवस्था संवैधानिक प्रावधान के माध्यम से स्थापित की जाए।

हिंद फाउंडेशन इसी प्रकार के संरक्षण का प्रस्ताव पारसियों के लिए भी करता है। इसका कारण यह है कि भारत ने पारसी समुदाय की सभ्यता, संस्कृति और अस्तित्व को ऐतिहासिक रूप से संरक्षण प्रदान किया है, जबकि उनकी मूल पितृभूमि अब उनकी संस्कृति के स्वतंत्र अस्तित्व के लिए उसी स्वरूप में उपलब्ध नहीं रही है।

दूसरी ओर, इस्लाम और ईसाई धर्म का पालन करने वाले मनुष्यों के लिए भारत की नागरिकता प्राप्त करने के नियम और मानदंड वर्तमान संवैधानिक तथा कानूनी ढाँचे के अनुसार ही यथावत रहने चाहिए।

5.2 समान नागरिकता और वैश्विक धार्मिक जिम्मेदारी

हिंद फाउंडेशन के इस दृष्टिकोण में भारत के सभी नागरिक कानून के समक्ष समान रहेंगे। भारत के भीतर किसी भी नागरिक के साथ उसके धर्म, जाति अथवा संप्रदाय के आधार पर कानूनी भेदभाव नहीं किया जाएगा।

लेकिन भारत के बाहर निवास करने वाले चार आर्य धर्मों के अनुयायियों के संरक्षण के लिए भारत अपनी विशेष ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जिम्मेदारी को संवैधानिक रूप में स्वीकार करेगा।

इस प्रकार, हिंद फाउंडेशन सावरकर के 'पितृभूमि' के विचार को भारत में निवास करने वाले नागरिकों की पहचान और अधिकारों से जोड़ने के बजाय, भारत के बाहर निवास करने वाले भारतीय मूल के इन चार धर्मों के अनुयायियों के प्रति भारत की जिम्मेदारी से जोड़ता है।

इस विचार का उद्देश्य भारतीय पहचान को अन्य संस्कृतियों के विरुद्ध खड़ा करना नहीं, बल्कि भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करते हुए संपूर्ण मानवजाति के साथ एकत्व स्थापित करना है।

हिंद फाउंडेशन के लिए भारत की वैश्विक भूमिका केवल अपनी संस्कृति का संरक्षण करने तक सीमित नहीं है; इसमें अपनी आध्यात्मिक परंपराओं के सार को संपूर्ण मानवजाति के साथ साझा करना और वैश्विक मानवीय एकता में योगदान देना भी शामिल है।

5.3 भारतीय राष्ट्रवाद से भारतीय अंतरराष्ट्रीयवाद की ओर

हिंद फाउंडेशन स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के विचारों को स्वीकार करते हुए भारत में सांप्रदायिकता और धर्मांतरण की गतिविधियों को अध्यात्म और विज्ञान के संयुक्त मार्ग से सत्य की साझा खोज की ओर मोड़ना चाहता है।

धर्मांतरण का विरोध करने के साथ-साथ वह ऐसी सामाजिक व्यवस्था की अनुशंसा करता है, जिसमें किसी भी धार्मिक अथवा सांप्रदायिक समूह को अन्य मनुष्यों पर अपनी पहचान और मान्यताएँ थोपने का अधिकार न हो।

हिंद फाउंडेशन के आकलन के अनुसार, सावरकर के राष्ट्रवाद के कुछ विचार भारत की पहचान को राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर केंद्रित रखकर अन्य मानव समुदायों के साथ वैचारिक संघर्ष की संभावना उत्पन्न करते हैं। इसके विपरीत, गांधी, नेहरू और विवेकानंद के विचारों को स्वीकार करते हुए हिंद फाउंडेशन भारतीयों से अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हुए भारत की सीमाओं से बाहर संपूर्ण मानवजाति के साथ जुड़ने और अध्यात्म तथा विज्ञान के मार्ग पर सत्य की साझा खोज में भाग लेने के लिए मानवजाति को प्रेरित करने का आह्वान करता है।

इस प्रकार, हिंद फाउंडेशन भारतीय राष्ट्रवाद को **भारतीय अंतरराष्ट्रीयवाद** की ओर विकसित करना चाहता है। इसका उद्देश्य भारतीय पहचान और भारतीय विचारधारा का भारत की भूमि पर संरक्षण करना है, लेकिन इस संरक्षण को मानवजाति से अलगाव अथवा अन्य संस्कृतियों के साथ संघर्ष का कारण नहीं बनने देना है।

हिंद फाउंडेशन के लिए भारत की वैश्विक भूमिका केवल अपनी संस्कृति का संरक्षण करने तक सीमित नहीं है; इसमें अपनी आध्यात्मिक परंपराओं के सार को संपूर्ण मानवजाति के साथ साझा करना और वैश्विक मानवीय एकता में योगदान देना भी शामिल है।

6. मानवजाति की एकता: पहचान से ऊपर सत्य

इतिहास ने बार-बार दर्शाया है कि जाति, नस्लीयता, राष्ट्र, भाषा, धर्म अथवा विचारधारा जैसी पहचानों के आधार पर मानवजाति को स्थायी रूप से एक नहीं किया जा सकता।

जब कोई मानवीय पहचान सत्य से अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाती है, तब उस पहचान के संरक्षण और विस्तार के लिए संघर्ष की संभावना उत्पन्न होती है। मानवजाति की एकता किसी एक नस्ल, राष्ट्र, भाषा, धर्म अथवा सांप्रदायिक विचारधारा की सर्वोच्चता से जन्म नहीं ले सकती।

मानवीय एकता का सबसे गहरा और सार्वभौमिक आधार सत्य के प्रति साझा प्रतिबद्धता है। क्योंकि सत्य की खोज मनुष्य मात्र की ऐसी गतिविधि है, जो किसी एक देश, धर्म, संस्कृति अथवा समय की सीमाओं में बँधी हुई नहीं है।

हिंद फाउंडेशन संपूर्ण मानवजाति को किसी एक संप्रदाय, धर्म अथवा सांस्कृतिक पहचान को स्वीकार करने के लिए आमंत्रित नहीं करता। वह मानवजाति को हृदयम् की आत्मानुभूति के लक्ष्य के साथ सत्य की साझा खोज की ओर आमंत्रित करता है।

इस खोज में प्रत्येक मनुष्य को अपनी आंतरिक स्वतंत्रता, विचारशक्ति, विवेक और अनुभूति के साथ भाग लेने का अधिकार है। अध्यात्म और विज्ञान के दोनों मार्गों के माध्यम से मनुष्य अपने अस्तित्व को समझने और संपूर्ण ब्रह्मांड के साथ अपने संबंध को अनुभव करने का प्रयास कर सकता है।

जब मनुष्य अपने भीतर विद्यमान पूर्णता का अनुभव करता है, तब उसे दूसरों पर प्रभुत्व स्थापित करने अथवा अपनी पहचान दूसरों पर थोपने की आवश्यकता नहीं रहती। वह अन्य मनुष्यों और संपूर्ण प्रकृति को अपने ही अस्तित्व के विस्तृत स्वरूप के रूप में देख सकता है।

इसी अनुभूति से प्रेम, करुणा, स्वतंत्रता, पारस्परिक सम्मान, जिम्मेदारी और सह-अस्तित्व का जन्म होता है।

हिंद फाउंडेशन का अंतिम विज़न ऐसे विश्व का निर्माण करना है, जहाँ मानवजाति की एकता किसी एक धर्म, राष्ट्र अथवा विचारधारा के प्रभुत्व पर नहीं, बल्कि सत्य की स्वतंत्र और साझा खोज पर आधारित हो।

ऐसा विश्व, जहाँ व्यक्ति अपने भीतर पूर्ण हो, समाज पारस्परिक दायित्व से संचालित हो, राज्य प्राकृतिक स्वतंत्रता और समानता का संरक्षण करे तथा संपूर्ण मानवजाति एक-दूसरे को प्रतिस्पर्धी अथवा विरोधी नहीं, बल्कि एक ही मूल अस्तित्व की अभिव्यक्ति के रूप में पहचाने।

◆ ◆ ◆

यही हृदयम् का दर्शन है।

यही हृदयमार्ग है।

और यही हिंद फाउंडेशन की अंतरराष्ट्रीय नैसर्गिक लोकतंत्र स्थापित करने की वैश्विक दार्शनिक परिकल्पना है।

सत्य की खोज। हृदयम् की अनुभूति। मानवजाति का एकीकरण।

HIND
FOUNDATION
HRIDAYAM FOR INTERNATIONAL NATURAL DEMOCRACY
TRUTH IS OUR GOAL • FREEDOM IS OUR PRINCIPLE • DEMOCRACY IS OUR PATH
REG. NO. : E/1830/BK

संपर्क

वेबसाइट

www.thehindfoundation.com

ईमेल

contact.hindfoundation@gmail.com